Lahari-Bhitya NaukA Vai

लहरी-भीत्या नौका वै

Document Information

Text title : Lahari-Bhitya Nauka Vai Sanskrit translation of Hindi song laharoM se Darakara naukA

File name : laharIbhItyAnaukA.itx

Category : misc, sanskritgeet, hkmeher

Location : doc_z_misc_general

Author : Harekrishna Meher meher.hk at gmail.com

Transliterated by : Harekrishna Meher

Proofread by : Harekrishna Meher

Acknowledge-Permission: Dr. Harekrishna Meher

Latest update : April 12, 2024

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 12, 2024

sanskritdocuments.org

Lahari-Bhitya NaukA Vai

लहरी-भीत्या नौका वै

("लहरों से डरकर नौका" हिन्दी गीतस्य संस्कृतानुवादः)
लहरी-भीत्या नौका वै गच्छति नो पारम् ।
नायात्युद्यम-निरतानां कर्मसु विफलत्वम् ।
उद्यम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ ०॥

कणिकां नीत्वा चलति यदा लघ्वी पिपीलिका,
रोहति भित्तौ स्खलति परं शतवारं सैका ।
मनसो विश्वासो धमनौ पूरयति साहसम्,
रोहे पतनं पतने रोहो जनयति नो खेदम् ।
अन्ते तस्याः श्रम-सर्वं याति नहि व्यर्थम् ।
नायात्युद्यम-निरतानां कर्मसु विफलत्वम् ।
उद्यम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ १॥

अवगाही कुरुते नूनं निमज्जनं जलधौ,
प्रत्यायाति च रिक्त-करो मुहुरपि गत्वाऽसौ ।
सरलं न लभ्यते वै मुक्ता सलिले सुगभीरे,
द्विगुणं वर्धत उत्साहो ह्यत्रोद्वेगभरे ।
शून्यागच्छति न तदीया मुष्टिः प्रतिवारम् ।
नायात्युद्यम-निरतानां कर्मसु विफलत्वम् ।
उद्यम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ २॥

असफलता त्वेकाह्वानं, तत् स्वीकुरु नूनम्,
पश्याभावः को जात:, सम्मार्जयाधिकम् ।
नाप्तं यावत् सफलत्वं, निद्रां त्यज सौख्यम् ।
सङ्घर्षाङ्गणमिह हित्वा न पलायेथास्त्वम् ।
लभ्यः किञ्चित् कृतं विना, जयकारो नैवम् ।
नायात्युद्यम-निरतानां कर्मसु विफलत्वम् ।

उद्यम-निरता न लभन्ते स्वपराजय-भारम् ॥ ३॥

मूल हिन्दी

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ॥ ०॥

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है ।
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
चढ़कर गिरना गिरकर चढ़ना न अखरता है ।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ॥ १॥

डुबकियाँ सिन्धु में गोताखोर लगाता है,
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है ।
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में,
बढ़ता दुगुना उत्साह इसी हैरानी में ।
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ॥ २॥

असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो,
क्या कमीं रह गयी देखो, और सुधार करो ।
जब तक न सफल हो नींद चैन को त्यागो तुम,
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम ।
कुछ किये बिना ही जय-जयकार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ।
कोशिश करनेवालों की हार नहीं होती ॥ ३॥

लहरों से डरकर नौका (हिन्दी गीत)
मूल-रचयिता - कवि सोहनलाल द्विवेदी
संस्कृत-गीतानुवादकः - डॉ. हरेकृष्ण-मेहेरः

Laharon Se Darkar Nauka (Hindi song)

Original Lyrics by : Poet Sohanlal Dwivedi

Sanskrit Version Lyrics by : Dr. Harekrishna Meher

Copyright - Dr. Harekrishna Mehera

Lahari-Bhitya NaukA Vai

pdf was typeset on April 12, 2024

Please send corrections to *sanskrit@cheerful.com*